Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 12, Issue 2 | November 2024 - April 2025 | pp. 99-105

जयपुर शहर परकोटा : वास्तुशास्त्र, खगोलखास्त्र, शिल्प शास्त्र और नगर नियोजन का अनूठा मिश्रण

रूबी मीना

शोथार्धी

इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

जयपुर की स्थापना कछवाहा वंश के राजपूत राजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 18 नवंबर 1727 को की थी, जिन्होंने 1699 से 1743 तक शासन किया। आमेर की भौगोलिक सीमाओं, बढ़ती जनसंख्या और जल की कमी के कारण उन्हें नई राजधानी की आवश्यकता महसूस हुई। इसके फलस्वरूप जयपुर का निर्माण कार्य 1726 में आरंभ हुआ और प्रमुख सड़कों, महलों तथा कार्यालयों को पूरा करने में लगभग चार वर्ष लगे। जयपुर की नगरीय योजना विद्वान वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के मार्गदर्शन में तैयार की गई, जो बाद में 1729 में जयपुर के दीवान (मंत्री) भी बने। विद्याधर ने वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र के सिद्धांतों को ध्यान में रखकर जयपुर की योजना तैयार की। सवाई जय सिंह द्वितीय ने भी विभिन्न भारतीय और विदेशी वास्तुशास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन कर नगर नियोजन में योगदान दिया। दरबारी कवि ईश्वर सिंह द्वारा रचित महाकाव्य ईश्वर विलास में विद्याधर के योगदान का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस नियोजित नगरी का निर्माण वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से किया गया, जिससे जयपुर भारत का पहला सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध शहर बना। इसकी वास्तु योजना और सौंदर्य आज भी अद्वितीय मानी जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर शहर के परकोटा भाग की वास्तुकला, ज्यामिति और खगोलविद्या का अनुपम संगम के अवलोकन व विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

संकेताक्षर—*स्थापना, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, खगोलशास्त्र, वास्तुकला*

परिचयात्मक

जयपुर, जिसे 'गुलाबी नगरी' के नाम से भी जाना जाता है, भारत का पहला सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध नगर है जिसकी स्थापना 18 नवंबर 1727 को कछवाहा वंश के महान राजपूत शासक सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। यह शहर न केवल स्थापत्य और कला की दृष्टि से, बल्कि वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और खगोलीय दृष्टिकोण से भी अद्वितीय है। जयपुर के परकोटे वाला क्षेत्र विशेष रूप से उस युग की उच्च कोटि की नगर नियोजन क्षमता, वास्तुशास्त्र, खगोलशास्त्र और शिल्पशास्त्र के गहन ज्ञान का प्रमाण है। इस शहर की योजना बंगाल के विद्वान वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के निर्देशन में तैयार की गई[1], जिन्होंने प्राचीन भारतीय वास्तु ग्रंथों और खगोलीय सिद्धांतों को समाहित करते हुए एक संतुलित, सुरक्षित और सुचारु नगरीय ढांचा प्रस्तुत किया। नगर का स्वरूप आयताकार रखा गया तथा नौ चौकों (चौपड़ों) में विभाजित किया गया, जो नवरत्न सिद्धांत पर आधारित है। परकोटे की ऊँची दीवारें, भव्य दरवाज़े, सुनियोजित सड़कें, बाजार और जल निकासी प्रणाली यह दर्शाते हैं कि यह शहर शुद्ध रूप से भारतीय नगर नियोजन परंपरा का गौरवशाली उदाहरण है। जनसंख्या और पानी की बढ़ती कमी के कारण जय सिंह द्वितीय को नई राजधानी की जरुरत महसूस हुई। जयपुर शहर का नक्शा एक शास्त्रीय शहर की अवधारणा को चयनित स्थल की व्यावहारिकताओं से जोड़ता है।[2]

ईश्वर विलास महाकाव्य, जो दरबारी कवि ईश्वर सिंह द्वारा लिखा गया है, विद्याधर के योगदान से संबंधित जानकारी प्रदान करता है। इस कृति के दसवें सर्ग में कई अंश हैं जो हमें शहर की योजना बनाने में विद्याधर की भूमिका की याद दिलाते हैं जो इस प्रकार हैं।[3]

गिरधारी के 'भोजनसार' ने विद्याधर को शहर का वास्तुकार बताया है। एक रोचक दोहे में योजना बनाने में विद्याधर की भूमिका का संकेत मिलता है जो इस प्रकार है।[4]

पुरकारे बहु हरष करि, मन महि मोद बदाय।
विद्याधर सो बोलि कहि, सहर सु एक बसाय।।

हाल के शोधों से पता चलता है कि जयपुर का निर्माण प्रस्तार योजना के अनुसार हुआ था।[5] प्रस्तार योजना का अर्थ है कि कोई गांव या कस्बा एक सोफे जैसा दिखता है। लेकिन अगर देखा जाये तो जयपुर के निर्माण में प्रस्तार योजना का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया गया जयपुर के नक्शे पर नजर डालने से पता चलता है कि इसका आकार किसी ज्यामितीय आकृति जैसा नहीं है। यह स्पष्ट है कि जयपुर का चारदीवारी वाला शहर किसी भी तरह से प्रस्तार योजना के विवरण से मेल नहीं खाता। यह शहर दरअसल सूरजपोल गेट से चांदपोल गेट तक पूर्व से पश्चिम तक एक लंबी सड़क द्वारा दो भागों में विभाजित है। इन सड़कों के दक्षिण में असमान आकार और माप के पाँच आयताकार ब्लॉक हैं। इस सड़क के उत्तर में एक है चौकोर ब्लॉक में सिटी पैलेस और दूसरा ब्लॉक पुरानी बस्ती है, इसकी दक्षिणी और पूर्वी दिशा में सीधी सड़कें हैं लेकिन उत्तरी और उत्तर पश्चिमी सीमाएँ अनियमित हैं। मूल रूप से जयपुर में चार आयताकार ब्लॉक बनने थे, जिनमें आज (1) महल (2) पुरानी बस्ती, (3) तोपखाना देश और (4) मोदीखाना और विशेश्वर जी को मिलाने वाला ब्लॉक शामिल है। इन दो अंतिम ब्लॉकों को विभाजित करने के लिए कोई सड़क नहीं बनाई गई थी और वर्तमान चौड़ा रास्ता और त्रिपोलिया गेट की योजना कब बनाई गई यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन स्पष्ट रूप से चौड़ा रास्ता बाजार की तरह नहीं बनाया गया था, जैसा कि आज जौहरी बाजार, किशनपोल बाजार है। चौकड़ी, घाट दरवाजा, तोपखाना हजूरी और रामचंदरजी के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र को शुरू में पूरी तरह से अविकसित छोड़ दिया गया था। यह क्षेत्र रेत के टीलों से भरा हुआ था, ऐसे हिस्सों को बाद में शहर की दीवार बनाकर शहर की सीमा में शामिल कर लिया गया था।

जयपुर शहर के कुछ नक्शे महल में रखे हुए हैं। यह नक्शा शहर में इमारतों की प्रगति रिपोर्ट प्रतीत होता है। जाहिर है कि निजी इमारतों के निर्माण पर राजा का सख्त नियंत्रण था। अभिलेखों से पता चलता है कि सवाई जयसिंह मंत्रिमंडल के मंत्री विद्याधर भट्टाचार्य राजकीय और निजी दोनों इमारतों के लिए मुख्य वास्तुकार और इंजीनियर थे। शहर की स्थापना के बारह साल बाद गिरधारी ने अपने 'भोजनसार' में उल्लेख किया है कि जयसिंह ने विद्याधर को यहां एक शहर बसाने का निर्देश दिया था और अपनी गुप्त इच्छा के अनुसार इस शहर के भीतर जय निवास बनाने की इच्छा जताई थी और कई चौराहों पर कई दुकानें बनाने का निर्देश दिया था, जिनके घरों के पिछवाड़े आपस में मिले होने चाहिए। शहर के लिए चार बाजारों की योजना बनाई गई थी, जिन्हें बाद में जौहरी बाजार, सिरेह ड्योढ़ी बाजार, किशनपोल बाजार और गणगौरी बाजार के नाम से जाना गया। मानचित्र पर दी गई प्रगति रिपोर्ट के अनुसार किशनपोल बाजार के पश्चिमी हिस्से की 144 दुकानों को छोड़कर इन बाजारों के प्रत्येक तरफ जयपुर राज्य द्वारा 162 दुकानें बनाई गईं। किशनपोल बाजार के एक तरफ 144 दुकानों का क्षेत्रफल 16 बीघा था और 162 दुकानों का क्षेत्रफल 18 बीघा था। चांदपोल बाजार पर विचार किया गया था, लेकिन उस समय इसका निर्माण नहीं किया गया। त्रिपोलिया बाजार के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचा गया। मूल योजना में शहर के पूर्वी हिस्से में रामगंज और अन्य बाजारों के लिए कोई प्रावधान नहीं था। किशनपोल बाजार के कोने में 88 दुकानें निर्माणाधीन थीं, जिन्हें चांदपोल बाजार के नाम से जाना जाता है। इन दुकानों को बाद में गिरा दिया गया होगा। सांगनेरी गेट और अजमेरी गेट के लिए अब बनाए गए चौकों में दो कटले बनाने पर विचार किया गया था।शायद ये कभी बने ही नहीं।[6]

बाजारों की वास्तुकला विशेषताएँ हैं—छज्जों (ईव्स) का उपयोग जिसके परिणामस्वरूप मजबूत क्षैतिज रेखाएँ बनती हैं, खांचों पर ऊर्ध्वाधर मेहराबों को लगाया गया है, सीधे सूर्य की रोशनी और सड़क पर परावर्तित सूर्य की चमक को रोकने के लिए नाजुक जालीदार स्क्रीन से भरे मेहराबों की एक मॉड्यूलर प्रणाली बनाई गयी है।[7]

जयपुर शहर की कुछ अन्य विशेषताएँ, इसकी योजना के अलावा, मानसरा के निर्देशों का पालन करती हैं। बाजार इसका

एक उदाहरण हैं।[8] मानसरा में कहा गया है कि दुकानें मुख्य सड़कों पर स्थित होनी चाहिए, कि वे घरों की निचली मंजिल से मिलकर बनी होनी चाहिए, जो एक समान डिजाइन की होनी चाहिए, और सड़कों के किनारे चौड़े फुटपाथ होने चाहिए और उन्हें महाराजा के महल से जोड़ा जाना चाहिए।[9] जयपुर के बाजार इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। दुकानें शहर में बनाई जाने वाली पहली इमारतों में से थीं और राज्य के नियंत्रण में बनाई गई थीं, इस प्रकार डिजाइन की एकरूपता सुनिश्चित की गई जो योजना की नियमितता पर जोर देती है। निर्मित दुकानों को वास्तुकला के साथ-साथ शिल्प-शास्त्रों के अनुरूप भी बनाया गया है, क्योंकि डिजाइन में वे बिल्कुल चित्तौड़ के मोती बाजार की तरह हैं, जो पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य या उससे पहले बनाया गया था।[10] प्रत्येक दुकान में मूल रूप से एक एकल कक्ष होता था और दुकानों की प्रत्येक पंक्ति में दुकानों के सामने एक बरामदा होता था। पैदल यात्रियों को छाया प्रदान करने के लिए बरामदा आवश्यक थे। बरामदे की छतें, जिन तक सड़क से सीढ़ियों के जरिए पहुंचा जा सकता था, छतों के रूप में काम करती थीं, जहाँ से जनता शाही जुलूस या अन्य शानदार कार्यक्रम देख सकती थी। दो स्तरों पर सार्वजनिक स्थान का यह सरल प्रावधान राजपूत शहर की वास्तुकला में अद्वितीय है।बरामदे दुकानों तक छायादार पहुंच प्रदान करते थे। वी प्रभाकर बेगड़े अपनी पुस्तक फोर्ट्स एंड पैलेसेज ऑफ इंडिया में लिखते है कि हाल के दिनों में जयपुर के दुकानदारों को अपनी दुकानों के ठीक सामने बरामदे के हिस्से को घेरने की अनुमति दे दी गई है लेकिन राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने फरवरी 2000 से अगस्त 2001 के बीच में ऑपरेशन पिंक के द्वारा सभी बाजारों के बरामदे खाली करवा लिए थे।

दुकानों के अलावा, शहर की एक और विशेषता जो मानसार शास्त्र के नियमों को पूरा करती है, वह है इसकी सामाजिक व्यवस्था। मानसार शास्त्र बताता है कि शहर का कौनसे क्षेत्र में किस व्यक्ति को रहना चाहिए, यह उसकी जाति या पेशे पर निर्भर करता है। इस वितरण को व्यवसायों और जिलों की सटीक परिभाषाओं के साथ बहुत विस्तार से समझाया गया है मोटे तौर पर यह कहा गया है कि उच्च जाति के लोगों को शहर के केंद्र के करीब के क्षेत्रों में रहना चाहिए और निम्न जाति के लोगों को परिधि पर रहना चाहिए।[11] अर्थशास्त्र और मंडन सूत्रधार के द्वारा लिखित वास्तुराज बल्लभ सहित अन्य शास्त्र भी इसी तरह के निर्देश देते हैं।[12] जाति या पेशे के अनुसार लोगों का वितरण मोहल्ला प्रणाली के रूप में जाना जाता है और शास्त्रों द्वारा सुझाई गई अन्य व्यवस्थाओं के विपरीत, इसे भारतीय शहरों और गाँवों में लगभग सार्वभौमिक रूप से अपनाया गया था।

जबकि, मानसर का अर्थ है ऐसा गांव या कस्बा जो आकार में चौकोर या आयताकार होता है।

ऐसी योजना में शहर की दीवार और इमारतों के बीच पैशाचा (जगह) छोड़ी जाती है और इस जगह को एक बुलेवार्ड (बुलेवार्ड एक प्रकार का चौड़ा मार्ग होता है जिस पर कतारों में पेड़ लगे होते हैं) द्वारा सीमांकित किया जाता है जो इसके चारों ओर जाती है। जगह या कस्बे को उपयुक्त राजमार्गों के एक नेटवर्क द्वारा चार, नौ या सोलह वार्डों में विभाजित किया जाता है।[13] इन राजमार्गों को अलग-अलग मापों जैसे छह, सात, आठ, नौ या ग्यारह डंडों (माप) के साथ चौड़ा किया जाता है। सड़कें शतरंज की बिसात के रूप या पैटर्न के अनुसार वार्डों में बनाई जाती हैं। वार्डों को समान संख्या में भूखंडों में विभाजित नहीं किया जाता है। इन वार्डों को अलग-अलग भूखंडों में विभाजित किया जाता है जैसे एक को नौ, दूसरे को सोलह और तीसरे को पच्चीस और इसी तरह विभाजित किया जाता है। ये भूखंड लोगों की स्थिति और पद (रैंक) के अनुसार आवंटित किए गए थे। गांव या शहर चार दीवारों (सरहद) से घिरा होता है, जिसके दोनों ओर चार मुख्य द्वार होते हैं और कोनों में चार सहायक द्वार होते हैं। सीमाओं में पैशाच भूखंड होते हैं। इन पर कारीगर और शिल्पकार निवास करते हैं। वैश्य वर्ग या निम्न वर्ग गांव या शहर के उत्तर में बसा हुआ है।

मनसर[14] (मानसार), जिसे मनसा या मनसार शिल्प शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय वास्तुकला और डिजाइन पर एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है।[15] 70 अध्यायों (अध्यायों) और 10,000 श्लोकों (छंदों) में संगठित, यह शिल्प शास्त्र-कला और शिल्प के विज्ञान—पर कई हिंदू ग्रंथों में से एक है, जो कभी पहली सहस्राब्दी ई.पू. में मौजूद थे। मानसार प्राचीन भारतीय वास्तुकला पर उन कुछ ग्रंथों में से एक है, जिनकी पूरी पांडुलिपियाँ आधुनिक युग में बची हुई हैं। यह एक ग्रंथ है जो हिंदू मंदिरों, मूर्तियों, घरों, उद्यानों, पानी की टंकियों, कस्बों

और अन्य संरचनाओं के निर्माण पर विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान करता है।) अपने दूसरे अध्याय के आरंभ में मापन प्रणाली का विवरण देता है। ऐसा माना जाता है कि नगर नियोजन के लिए माप की इकाई 'दण्डा' थी (एक दण्डा = 4 हस्त = 6 फीट लगभग)। मापन अब फीट या मीटर में किया जाता है। गिरधारी के भोजनसार में उल्लेख है कि 'बेग बसायक वर्ष में बारहै कोस ही फेर' जिसका अर्थ है कि "सवाई जयपुर एक वर्ष में आबाद होना चाहिए और इसका विस्तार 12 कोस होना चाहिए।" यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पूर्वनिर्धारित योजना है, हालांकि यह आयाम शहर के वास्तविक पैमाने से बहुत अधिक है। जयपुर में प्रयुक्त माप के संबंध में, हमारे पास विभिन्न जानकारी है कि एक पारंपरिक राजमिस्त्री कल्याण ने उल्लेख किया है कि माप की इकाइयों के रूप में हस्ता और अंगुला का उपयोग किया जाता था।[16]

कपड़द्वार मानचित्र से पता चलता है कि जयपुर में माप की इकाइयों के रूप में गज, सवाया (एक चौथाई अतिरिक्त) और बीघा का उपयोग किया जाता था।[17] 1924 में क्षेत्रीय आयुक्त ई.आर.के. बिएनकिंसशॉप के अनुसार, बीघा का माप मान स्थान के आधार पर 100 फीट से 185 फीट तक भिन्न होता है। दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास (सर्बतोभद्र) मुगल शैली में बनाए गए थे और वास्तुकला के विवरण में मुगल प्रभाव को देखा जा सकता है। दीवान-ए-खास योजना में चौकोर बना हुआ है और यह पश्चिम में एक संलग्न प्रांगण में स्थित है। यह एक आकर्षक संरचना है जो एक ऊंचे मंच पर बनी है और सभी तरफ से खुली हुई है। दीवान-ए-आम या सार्वजनिक दर्शकों का हॉल सभी तरफ से खुला है और अब इसका उपयोग संग्रहालय के उद्देश्य से किया जाता है।[18] "बिशप हेबर ने इसे "संगमरमर के खंभों वाला एक शानदार खुला मंडप' बताया है।"[19]

जयपुर की सड़कें ग्रिड पैटर्न में मजबूती से बनी हुई हैं, जो भारत में योजनाबद्ध शहर का एक बेहतरीन उदाहरण है। लेकिन उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में हमें कुछ विचलन देखने को मिलते हैं। उत्तर-पश्चिम भाग में नाहरगढ़ की पहाड़ी संभवतः अधूरे ग्रिड का कारण थी, जबकि दक्षिण-पूर्व में चौक से एक पूरी चौकरी अलग हो गई है। शहर के मध्य भाग में महल और जंतर मंतर हैं।[20]

शहर को नौ ब्लॉकों में विभाजित किया गया था, जिनमें से दो में राज्य भवन और महल शामिल थे, शेष सात जनता को आवंटित किए गए थे। शहर में नौ ब्लॉक और ब्लॉकों के सात विभाग हैं जिन्हें पुरानी बस्ती, तोपखाना देश, चौकडी मोदीखाना, चौकडी विशेश्वर जी, घाट दरवाजा, चौकडी रामचंद्र और तोपखाना हजूरी के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि मोदीखाना और विशेश्वरजी मूल रूप से एक ही ब्लॉक के थे। बाद में चौड़ा रास्ता बनाकर इसे दो ब्लॉकों में विभाजित कर दिया गया। अगर महल के कब्जे वाले क्षेत्र को दो ब्लॉकों में शामिल माना जाए तो शहर के उत्तरी हिस्से में एक और चौकडी रामचंद्र जी ब्लॉक को भी शामिल किया जाएगा, तो ब्लॉकों की कुल संख्या नौ होगी।[21] चौकड़ी मोदीखाना और विशेश्वर जी को एक वर्ग माना जा सकता है और यह महल के दक्षिण में स्थित है। अन्य शेष ब्लॉक आकार में समान नहीं हैं। सड़कों के ग्रिड में भी अनियमितताएं हैं। तोपखाना हजूरी की आंतरिक सड़कें अनियमित हैं। पुरानी बस्ती के मामले में, उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र खंडित है, और इस चौकड़ी में विभाजन स्पष्ट नहीं हैं। उपरोक्त दो चौकियों में नियमितता देखी जाती है। अन्य क्षेत्रों में माध्यमिक सड़कें 50 फीट से बहुत संकरी हैं। चौकड़ी मोदीखाना, विशेश्वर जी, घाट दरवाजा, रामचंद्र सभी उत्तर-दक्षिण सड़कों द्वारा छह ब्लॉकों में विभाजित हैं। तोपखाना देश, पुरानी बस्ती और फिर मोदीखाना-विशेश्वर जी प्रारंभिक चरण में नियोजित इकाइयाँ हैं। सड़क और ब्लॉक के आयाम बताते हैं कि ये तीन ब्लॉक और शाही महल शहर के मूल रूप से नियोजित क्षेत्र का गठन करते थे। प्रस्तार का आदर्श रूप एलएस-14 मानचित्र में दर्शाए गए चार चौकड़ियों में दर्शाया गया है, जो नगर महल में संरक्षित हैं।[22] विशाल प्राचीर का निर्माण किया गया था, जिसे परकोटे की दीवार कहते है इसे सात गढ़वाले फाटकों से खोला गया था। शहर दीवार (सरहद) से घिरा हुआ था, जिसके दक्षिण में चार द्वार थे, जबकि पूर्व, पश्चिम और उत्तर में एक-एक द्वार था।[23] दीवार वाले शहर की योजना में सात द्वार दिखाए गए हैं। पूर्व में सूरजपोल, पश्चिम में चांदपोल, उत्तर-दक्षिण अक्ष पर शिवपोल (सांगानेरी गेट), दक्षिणी छोर पर दो अन्य द्वार थे, किशनपोल (अजमेरी गेट), और दक्षिणी शहर की दीवार पर रामपोल या घाट द्वार। जयपुर शहर की दीवारें इन द्वारों के स्थान से निर्देशित होती थीं। कपड़ द्वार

दस्तावेज में द्वार के नाम चांदपोल, सूरजपोल, किशनपोल, शिवपोल (सांगानेर गेट), रामपोल (घाट दरवाजा), गंगापोल और त्रिपोलिया का उल्लेख है।[24]

जयपुर का एक और प्रकाशित अदिनांकित मानचित्र भी है, जिसका अध्ययन सुसान गोले ने किया था, जो आठ द्वारों वाले जयपुर शहर के उपखंड और स्थान को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। आठ द्वार सूरजपोल, चांदपोल, शिवपोल, ध्रुवपोल, रामपोल, गंगा पोल, किशनपोल और ब्रह्मपोल हैं।[25] हाल के दिनों में जयपुर चारदीवारी शहर में ब्रह्मपोल को छोड़कर सभी द्वार देखे जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद सम्राट गेट ही ब्रह्मपोल था क्योंकि ब्रह्मपुरी में प्रवेश सम्राट गेट से होता है।[26]

राजवल्लभ के अनुसार नगर की दीवार में चार सिंहद्वार (सिंहद्वार) तथा प्रवेश के आठ मजबूत द्वार होने चाहिए। सियाहा हजूर प्रविष्टियों से सवाई जयसिंह की यात्रा का पता चलता है। जब जयसिंह ने नगर भ्रमण प्रारंभ किया तो वे चांदपोल, सूरजपोल, शिवपोल तथा रामपोल द्वारों से होकर गुजरे। यह यात्रा 1733 में की गई थी। यह साक्ष्य हमें उक्त तिथि में द्वारों की संख्या तथा प्रकार का अनुमान लगाने में सहायता करता है।[27]

चौक एक हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है 'एक केंद्रीय स्थान जिसमें चार कोने हों।' यह केंद्रीय बाजार है जिसमें कई सड़कें मिलती हैं। यह पेशेवर मनोरंजन के केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। मानचित्र और नोट संख्या 113-तरह सवाई जयपुर में चौक, बाजार वगैरह में जयपुर के चौक और बाजारों की योजना है। इस मानचित्र में रामचौक और चांदनी चौक, माणिक चौक और पहाड़गंज चौक जैसे चौकों के नाम बताए गए हैं। सवाई जयसिंह ने ये नाम शाहजहांनाबाद से लिए हैं।[28] सियाहा हुजूर के कागज से पता चलता है कि आमेर राजा चैत्र वदी 10, एस. 1790 (29 मार्च 1733)[29] को होली मनाने के लिए माणिक चौक, चांदनी चौक, राम चौक, पहाड़गंज चौक गए थे। अर्हसत्ता इमरती में राम चौक और चांदनी चौक क्षेत्र की मरम्मत से संबंधित जानकारी भी भरपूर है।[30]

सिटी पैलेस को छोड़कर बाकी सात ब्लॉक में रिहायशी इलाके हैं, जिनमें व्यावसायिक स्थान हैं। व्यावसायिक और आवासीय सड़कों में अंतर था। व्यावसायिक सड़कों में भूतल पर दुकानें हैं, जो ब्लॉक की लंबाई तक फैले एक गलियारे द्वारा छायांकित हैं, जो पहली मंजिल पर स्थित रहने वाले क्वार्टर के सामने एक छत के लिए नींव का काम भी करता है। आवासीय सड़कों में दुकान, व्यापार, बैठने की जगह भी शामिल है, जिसका उपयोग मूल रूप से पारिवारिक व्यवसाय या व्यापार के लिए किया जाता था। यह व्यवस्था वर्तमान में भी प्रचलित है।[31]

यह रास्ता या व्यावसायिक क्षेत्र जयपुर के आवासीय क्षेत्रों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक किनारा प्रदान करता है। मुख्य व्यावसायिक क्षेत्र विशिष्ट वस्तुओं के लिए थे, जबकि ब्लॉकों के अंदर दैनिक प्रावधान की दुकानें निवासियों को सामान्य वस्तुओं तक पहुंच में आसानी प्रदान करती हैं। हाल के शोधों से पता चलता है कि जयपुर शहर में शुरू में केवल चार बाजारों की योजना बनाई गई थी और बाद में इसे जौहरी बाजार, सिरेह ड्योढ़ी बाजार, गणगौरी बाजार और किशनपोल बाजार नाम दिया गया। यह मानचित्र उन 162 दुकानों की प्रगति को दर्शाता है जो राज्य द्वारा इन बाजारों के प्रत्येक तरफ बनाई गई थीं। किशनपोल बाजार के पश्चिमी तरफ केवल 144 दुकानें थीं। 162 दुकानों की एक शृंखला ने 18 बीघा क्षेत्र को कवर किया। किशनपोल बाजार की दुकानें 16 बीघा क्षेत्र में फैली हुई थीं।[32] रॉय के अनुसार मूल योजना में शहर के पूर्वी हिस्से में रामगंज बाजार का कोई प्रावधान नहीं था।[33] हमारे दस्तावेजी साक्ष्य बताते हैं कि विशिष्ट इलाके छीपा (कपड़ा छापने वाले) और कुमारवाड़ (कुम्हार) के थे।[34] कपड़द्वार के नक्शे में अलग-अलग जातियों के लिए अलग-अलग इलाकों की योजना बनाने का स्पष्ट संकेत मिलता है, उदाहरण के लिए, गुजराती छीपा (मुद्रक) का मुहल्ला, गूजरों, ब्राह्मणों, कुम्हारों (कुम्हारों) की कॉलोनी और सांगानेर में जुलाहा (बुनकर) के घर।[35] दक्षिण भारत के संदर्भ में, सिलप्पादिकाराम बुनकरों के लिए अलग-अलग सड़कों का उल्लेख करता है।[36] ऐसा प्रतीत होता है कि निचली जातियाँ शहर के बाहरी इलाकों या उपनगरों में रहती थीं। जयपुर में ब्राह्मणों के लिए अलग क्षेत्र था, जिसे ब्रह्मपुरी के नाम से जाना जाता था और सवाई जयसिंह द्वारा बनारस से धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए ब्राह्मणों को आमंत्रित किया जाता था। सवाई जयसिंह ने उन्हें नए बने जयपुर शहर में रहने के लिए मुफ्त जमीन भी आवंटित की थी। बुद्धि विलास और कपड़द्वार में ब्रह्मपुरी के बारे में जानकारी मिलती है। अर्थशास्त्र

में विशिष्ट जातियों के लिए विशिष्ट दिशा की सिफारिश की गई है जैसे कि ब्राह्मण उत्तर में रहेंगे, क्षत्रिय पूर्व में, वैश्य दक्षिण में और शूद्र, जो समाज के सबसे निचले तबके का वर्ग है, पश्चिम में रहेंगे। इस योजना को जयपुर शहर में मौजूद माना जा सकता है।

निष्कर्ष

जयपुर नगर की स्थापत्य योजना भारतीय शास्त्रीय परंपराओं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अद्वितीय संगम है। सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा 1727 में स्थापित यह नगर न केवल भारतीय नगर नियोजन की श्रेष्ठता का प्रतीक है, बल्कि यह इस बात का भी प्रमाण है कि प्राचीन भारतीय वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र और खगोलशास्त्र कितने उन्नत थे। विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा मानसार जैसे प्राचीन ग्रंथों के निर्देशों के अनुसार बनाई गई इस नगरी की योजनाबद्धता, वर्गों में विभाजन, सड़क नेटवर्क, बाजार व्यवस्था, सामाजिक विन्यास और भवन निर्माण की एकरूपता यह दर्शाती है कि यह शहर एक सुविचारित, समन्वित और गहन अध्ययन पर आधारित संरचना है। जयपुर के बाजारों, मोहल्लों और भवनों में परंपरा, सौंदर्यबोध और व्यावहारिकता का अद्वितीय तालमेल देखा जा सकता है। परकोटे की सीमाएं, विशाल द्वार, छायादार बरामदे, समान डिज़ाइन वाली दुकानें और जाति एवं व्यवसाय आधारित मोहल्ला व्यवस्था इसकी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। यह स्पष्ट होता है कि जयपुर केवल एक ऐतिहासिक नगर ही नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा और वास्तुशास्त्र की जीवंत मिसाल भी है। यह नगर आज भी आधुनिक नगरीय विकास के लिए एक प्रेरणा स्रोत है, जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक आवश्यकता के संतुलन को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. दस्तनार कोमवार, परिशिष्ट केय अर्हसत्ता इमरती, बंडल संख्या 13 में दिए गए विद्याधर का सेवा रिकॉर्ड
2. उपर्युक्त
3. सिंह ईश्वरी ईश्वरविलास महाकाव्य, पृ.सं. 191-93
4. गिरधारी, भोजनासर
5. गहलोत राम प्रकाश, जयपुर दर्शन, नगर विकास न्याय परिसर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर, पृ.सं. 4
6. आचार्य, पी.के., आर्किटेक्चर ऑफ मानसरा वॉल्यूम IV, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 1934
7. रॉय ए.के., जयपुर का इतिहास, पृ.सं. 40
8. मूल दस्तावेज, जयपुर राज्य का इतिहास
9. अग्रवाल बी.डी., जोधपुर, राजस्थान जिला गजेटियर्स, जयपुर, 1979
10. अग्रवाल, रत्न चंद्रा, मेवाड़ के कुछ प्रसिद्ध मूर्तिकार और वास्तुकार, भारतीय ऐतिहासिक त्रैमासिक, खंड 33, संख्या 4 (दिसंबर 1957), पृ.सं. 321-34
11. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट, खंड I-XXIII संस्करण। अलेक्जेंडर कनिंघम, शिमला, कलकत्ता, 1871-87
12. जिमिनो, रोजा मारिया (सं.), लाइफ एट कोर्ट इन राजस्थान, ए. रहमान के रूप में उद्धृत, 1985, पृ.सं. 18
13. रे अमिता, प्राचीन भारत में गांव, कस्बे और धर्मनिरपेक्ष इमारतें, फिरमा के.एल. मुखोपाध्याय बंछाराम अकुर लेन कलकत्ता द्वारा प्रकाशित, 1964
14. दत्त, बी.बी., प्राचीन भारत में नगर नियोजन, थैकर स्पिंक एंड कंपनी, कलकत्ता और शिमला, 1925 पुनर्मुद्रण 2009, पृ.सं. 235-37
15. एचटीटीपीएसः//इन.विकिपीडिया.ओआरजी/विकी/मनसारा
16. क्लॉस के. क्लोस्टरमायर, हिंदू धर्म का संक्षिप्त विश्वकोश, वनवर्ल्ड प्रकाशन, ऑक्सफोर्ड, 2014, पृ.सं. 112. आईएसबीएन 978-1-78074-672-2
17. जैन, शिखा, प्रिंसली टेरेन-आमेर, जयपुर और शेखावाटी, शुभी प्रकाशन गुड़गांव, 2006, पृ.सं. 134
18. कपड़-द्वार, मानचित्र एवं नोट्स संख्या-45, 5
19. भटनागर, वी.एस., सवाई जय सिंह का जीवन और समय, इम्पेक्स इंडिया, नई दिल्ली, 1974, पृ.सं. 334
20. हेबर, बिश्क, एक यात्रा का वर्णन, इरूआ के ऊपरी प्रांतों के माध्यम से, पहली बार प्रकाशित 1827, पुनर्मुद्रण, 1993, दिल्ली खंड II, पृ.सं. 406
21. फुनो, शुजी, यामामोटो, नाओहिको और पंत, मोहन, जयपुर शहर, राजस्थान, भारत का अंतरिक्ष निर्माण, सर्वेक्षण द्वारा बनाए गए शहर के मानचित्रों (1925-28) पर एक विश्लेषण, जर्नल ऑफ एशियन आर्किटेक्चर एंड बिल्डिंग इंजीनियरिंग, मार्च, 2002
22. उपर्युक्त
23. उपर्युक्त

24. उपर्युक्त, पृ.सं. 262
25. कपड़-द्वार, मानचित्र और नोट्स संख्या -113, 259
26. गोले, सुसान, भारतीय मानचित्र और योजनाएँ, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली, 1989, पृ.सं. 53
27. जैन, शिखा, पूर्वोक्त, पृ.सं. 188
28. सिया हजूर पेपर्स, एस. 1790 जे.एस.ए. भटनागर, वी.एस., सवाई जय सिंह का जीवन और समय, इम्पेक्स इंडिया, नई दिल्ली, 1974, पृ.सं. 333
29. हसन एस. नूरुल एक मध्यकालीन भारतीय शहर की आकृति विज्ञान 18वीं और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में शाहजहाँनाबाद का एक केस अध्ययन, 1982, भारतीय इतिहास कांग्रेस, नई दिल्ली
30. सिया हजूर पेपर्स, एस. 1790 जे.एस.ए. भटनागर, वी.एस., सवाई जय सिंह का जीवन और समय, इम्पेक्स इंडिया, नई दिल्ली, 1974
31. अर्हसत्ता इमरती, बंडल नंबर 3
32. बाजार और गली का भौतिक सर्वेक्षण
33. रॉय, ए.के., जयपुर शहर का इतिहास, पृ.सं. 40
34. उपर्युक्त
35. पोतदार का रोजनामचा, दिनांक वी.एस. 1783/1726, आर.एस.ए. बीकानेर। गुलाबी शहर की योजना बनाना, नक्शे और दस्तावेज, पृ.सं. 37
36. कपड़ द्वार, मानचित्र एवं नोट्स संख्या-69